लॉकडाउन में महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक भूमिका एवं संघर्ष हल्द्वानी ब्लॉक (जिला–नैनीताल,उत्तराखण्ड) का एक अध्ययन

चन्दन सिंह
पी.जी.डी.सी.ए. एम.बी.ए. एम.एस.डब्लू.
रिसर्च स्कॉलर आर.के.डी.एफ. विश्वविद्वयालय,रॉची
पताः लोहरियासाल मल्ला,पोस्ट–कठघरिया,हल्द्वानी–263139
जिला–नैनीताल,उत्तराखण्ड

प्रस्तावना

यह अध्ययन उत्तराखण्ड में जिला– नैनीताल के हल्द्वानी ब्लॉक से सम्बधित है जिसमें लॉकडाउन के दौरान महिलाओं की भूमिका का अध्ययन किया गया है जिसमें मुख्यतः आर्थिक भूमिका का अध्ययन किया गया है, जैसा कि यह सर्वविदित है भारतीय समाज में महिलाएँ पहले से ही विभिन्न प्रकार के दायित्वों का निर्वहन करती आ रही हैं। जिसमें एक महिला एक माँ के किरदार में, एक पत्नी के किरदार मे, एक पुत्री के किरदार में, एक बहू के किरदार मे , एक बहन के किरदार में, इतनी सारी भूमिकाओं का निर्वहन एक साथ बड़ी ही निष्ठा से निभाती आ रही हैं इसके साथ ही उन्होंने बाह्य जगत में भी स्वयं को सिद्ध किया है, चाहे वह सामाजिक हो या फिर आर्थिक। तो ऐसी परिस्थिति में भूमिका संघर्ष होना स्वाभाविक ही है जो नया नहीं है बल्कि पहले से चलता आ रहा है लेकिन लॉकडाउन महिलाओं के लिये एक अलग प्रकार का भूमिका संघर्ष को लेकर आया क्योकि Work from home' (**घर से कार्य**) की संस्कृति' ने महिलाओं में भूमिका को बढ़ा दिया। एक ही समय में घर का कार्य तथा कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारी निभाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। प्रस्तुत शोध पत्र लॉकडाउन के कारण महिलाओं में आये भूमिका संघर्ष पर आधारित है।

कुंजी शब्द– लॉकडाउन, भूमिका, भूमिका संघर्ष, वर्क फ्राम होम।

पारिवारिक एवं मनौवेज्ञानिक भूमिकाः

कोरोना संक्रमण के कारण पूरे देश में लाकडाउन कर दिया गया, परिणामस्वरूप बड़ी जनसंख्या में लोग घरों में कैद हो गये, जिसका प्रभाव लोगों की जीवनशैली व्यवहार एवं मानसिक स्थिति पर पड़ा। इसका प्रमुख कारण आर्थिक गतिविधियों का बंद होना तथा आवागमन पर प्रतिबंध लगना है। मनोवैज्ञानिको की मानें तो लॉकडाउन में बेचैनी, तनाव, घबराहट, रोगभ्रम तथा दुश्चिन्ता की शिकायत आम बात हो गयी है। इसके अतिरिक्त विभिन्न परामर्शदाताओ की माने तो इस लॉकडाउन में पारिवारिक विवाद के मामलों में बढ़ोत्तरी हुई हैं लॉकडाउन के प्रभावों की बात करे तो इसका प्रभाव समाज के सभी वर्गो पर पड़ा है विशेष रूप से महिला वर्ग पर, जो कि परिवार की धुरी हैं। वर्तमान समय में आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण के कारण एकाकी परिवार का प्रचलन बढ़ा है जिसके साथ ही महिलाओं ने घर के बाहर विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में अपनी सक्रियता सिद्ध की है। इन कारणो से महिलाओ के जीवन शैली पर दो प्रकार के प्रभाव पर पड़े हैं– पहला सकारात्मक दूसरा नकारात्मक।

एक तरफ तो महिलाएँ आर्थिक और सामाजिक रूप से सुदृढ़ हो गयी तो दूसरी तरफ महिलाओ की भूमिका दोहरी हो गयी। घर और बाहर दानों स्थानों पर उन्हें विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं का एक साथ निर्वहन करना पड़ गया क्यौकि पारिवारिक दायित्व तो उनके ऊपर सनातन काल से चला आ रहा था इधर बाह्य जगत मे प्रवेश करके बाह्य भूमिकायें भी महिलाओं ने अपना लीं। परिणामस्वरूप महिलाओं में भूमिका संघर्ष या अन्तर्द्वन्द उभर कर सामने आया। ऐसा नहीं कि यह भूमिका संघर्ष कोई नया विषय है यह तो हमारे समाज में पहले से ही विद्यमान रहा है। लॉकडाउन ने इस समस्या को और बढ़ा दिया है या यह कहें कि समस्यारूपी चाकू ने अपनी धार और तेज कर दी। परिवार की देखरेख व सभी सदस्यों की देखभाल की जिम्मेदारी सदैव स्त्रियाँ ही निभाती रही हैं चाहे वह शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो, पौष्टिक खानपान हो, बुजुर्गों की सेवा हो आदि।

कोरोना के कारण लगे लॉकडाउन में घरेलू सहायिकाओं के उपलब्ध न होने से घर के कार्यों का अतिरिक्त बोझ बढ़ा है इसके साथ ही आर्थिक गतिविधियाँ बन्द हो गयीं जिसके कारण एक विचित्र प्रकार की मनोदशा से गुजरना पड़ा, इसको कम करने का दायित्व भी महिलाओं से ही अपेक्षित है।

इस लॉकडाउन ने एक नयी कार्य संस्कृति को जन्म दिया– 'Work from home' जिसे '**घर से कार्य**' करना कहते है ऐसे में ही कामकाजी महिलाओं के लिये भूमिका संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी क्योंकि एक ही समय में उन्हें घर का कार्यभार भी संभालना है तथा उसी समय अपनी कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारियों को भी पूरा करना है तथा घर पर ही रहकर उन्हें अपने बच्चों के आनलाइन कक्षाओ ं को भी सुचारू पूर्वक व्यवस्थित करना है। एक साथ इन सभी जिम्मेदारियों का निर्वहन इतना आसान भी नहीं है ऐसा लगता है जैसे बैक टू पवैलियन की दशा हो गयी हो। इसके अतिरिक्त एक और संस्कृति हमारे समाज में जन्म ले चुकी है जिसमें परिवार के सभी सदस्य सुबह ही अपने–अपने कार्यक्षेत्र में निकल जाते हैं तथा शाम को घर वापस आते हैं, अर्थात एक साथ घर पर समय बिताने के अवसर कम हो गये। अब लॉकडाउन के कारण जब सभी घर में हैं तो आपस में सामंजस्य बैठा पाना भी मुश्किल हो गया है जिसके कारण पारिवारिक विवाद तथा घरेलू हिंसा की घटनाएँ भी बढ़ी हैं जिसकी पुष्टि विभिन्न दशेों की आई अनुसंधान सूचना से होती हैं। इस सम्बन्ध में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की मनोविज्ञान विभाग की डा0 रेनू जलाल का कहना है, ''लॉकडाउन मे ं समाज का यह पहलू दिखना ही था ज्यादातर भारतीय घरों में काम का बंटवारा बराबर नहीं हाता है।यहाँ तक कि अगर पति और पत्नी दोनों ही घर से काम कर रहे हैं तो भी अधिक बोझ महिलाओं पर ही पड़ता है।''

इस सम्बन्ध में एक रिपोर्ट यह भी है– देशों के आर्थिक विकास का लेखा जोखा रखने वाली वैश्विक संस्था Organization of Economic Cooperation and Development के सर्वे के अनुसार एक आम भारतीय महिला रोजना लगभग 6 घंटे अनपेड कार्य करती है यानी जिसका कोई भुगतान नहीं होता इसके विपरीत भारतीय पुरुष एक घंटे से भी कम ऐसा काम करते हैं जिसका भुगतान नहीं होता आम तौर पर घर के भीतर महिला व पुरुष के बीच यह अन्तर घरेलू सहायिकाओं की मदद से कम हो जाता है इनमे ं दाइयाँ, कुक, ड्राइवर, धोबी, माली, आदि शामिल हैं लेकिन कई बार एक ही व्यक्ति जब इन सभी कार्यों का निर्वहन करता है तो उसके सामने भूमिका संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसक कारण शारीरिक स्वास्थ्य तो प्रभावित होता ही है साथ ही साथ मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। इसी स्थिति का सामना आज के दौर मे ं महिलाओ ं को करना पड़ रहा है जिसका समाधान कहीं न कहीं आपसी तालमेल से ही संभव है क्योंकि हमारे समाज में पहले से ही विद्यमान है कि पति–पत्नी एक ही गाड़ी के दो पहिये हैं, दोनों में सामजंस्य होगा तभी जीवन की गाड़ी अच्छी तरह से चलेगी। क्योंकि– ''भाषाओं का अनुवाद हो सकता है भावनाओं का नहीं, इन्हें समझना पड़ता है।''

सामाजिक एवं आर्थिक भूमिका:

चूकि हल्द्वानी के आस–पास औधोगिक ईकाइयॉ रूद्रपुर और सितारगंज में है और लॉकडाउन के दौरान स्वास्थ संम्बधित इकाई को छोडकर अन्य सभी इकाईयो में कार्य बन्द था और पुरूष घर पर ही रह रहे थे प्रारम्भ में कुछ समय तो जैसे–तेसे आजीविका चलायी लैकिन दूसरे लॉकडाडन के मध्य में आर्थिक परेशानी का सामना होने लगा,जिसके बाद महिलाओं ने स्वयं बीडा उठाया व घर में रहकर अनेक स्व–रोजगार परक कार्य प्रराम्भ किये एवं महिला समूह के द्वारा कोरोना काल में प्रयोग किये जाने वाले अनेक वस्तुओ का निर्माण किया जाने लगा तथा इन उत्पादों को स्थनीय निकाय (जिला पंचायत व नगर निगम)के माध्यम से निस्तारण कर आर्थिक कमी को दूर किया जा रहा है

लॉकडाउन के दौरान प्रभावित लोग

लॉकडाउन के दौरान हल्द्वानी व इसके आस–पास रहने वाले लोग जो कि औधोगिक क्षेत्र (मेडिकल क्षेत्र को छोडकर),शिक्षा क्षेत्र,कोचिगं सेन्टर्स में कार्यरत, होटल एवं रेस्टरेन्ट एवं टूर एण्ड ट्रैवेल्स के कार्यकारी लोग पूर्ण रूप से या अल्प रूप से अपने रोजगार को खोया है चूकि लॉकडाउन के दौरान ये कार्य पूर्ण रूप से वर्जित थे अतः ये पाया गया कि बहुत सारे लोगो ने रोजगार को खोया भी है इस दौरान प्रभावित लोगो का लेखा निम्नवार है।

लॉकडाउन के दौरान कार्य क्षेत्र के अनुसार प्रभावित लोग

क्र0स0	कार्य क्षेत्र	प्रभावित लोग
1	औधोगिक क्षेत्र	2240
2	निजी शिक्षा क्षेत्र	2650
3	कोचिगं सेन्टर्स में कार्यरत	1450
4	होटल एवं रेस्टरेन्ट	3170
5	टूर एण्ड ट्रैवेल्स	3210

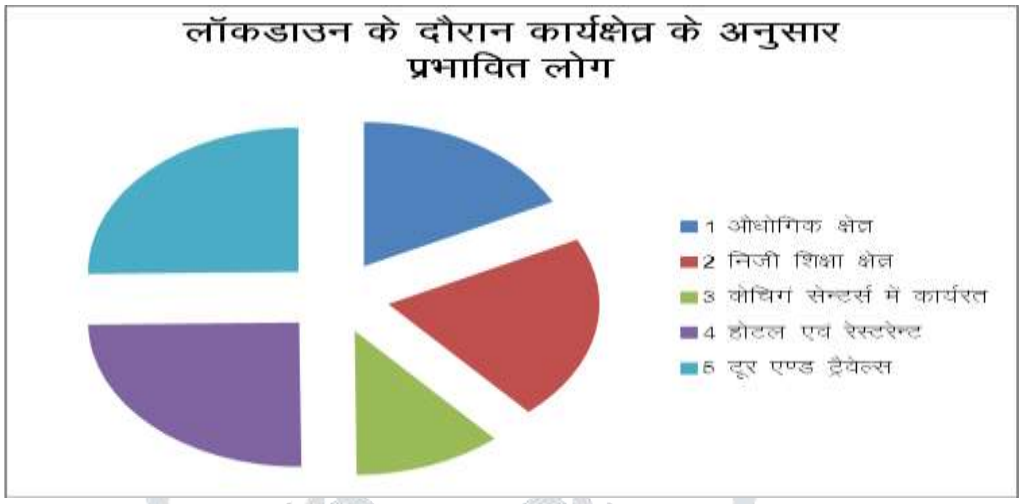

लॉकडाउन के दौरान महिलाऔं एवं महिला समूह द्वारा बनाये गये उत्पाद.

क्र0स0	उत्पाद(वस्तु)	मात्रा(संख्या / किलो0 / लिटर)
1	कपडें के मास्क	145000
2	हेन्ड मेड सीड राखी	22000
3	अचार	4250
4	जैम / मुरब्बा	4450
5	जूस	3500

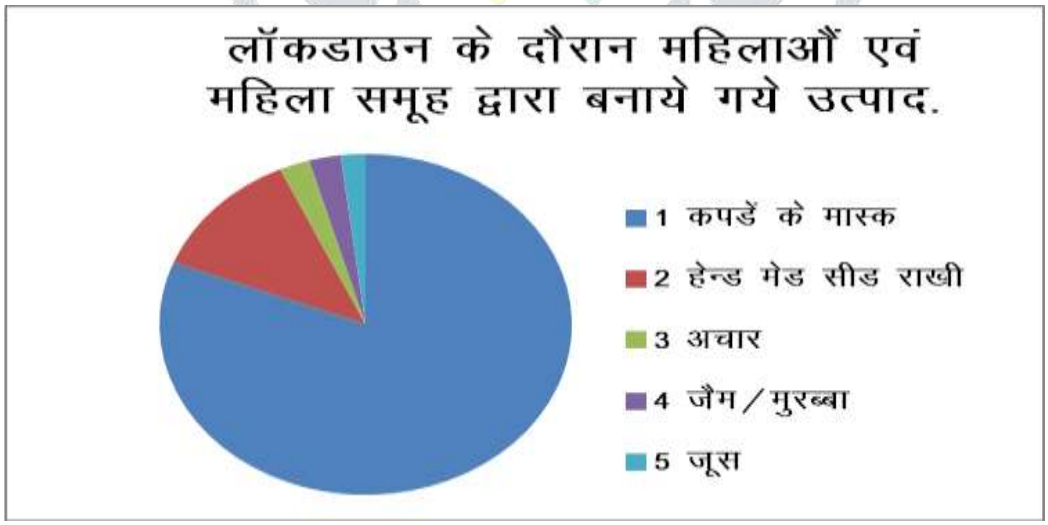

निष्कर्ष:

कोविड–19 लॉकडाउन के दौरान जब अधिकतर निम्न व निम्न मध्यम एवं मध्यम वर्ग के परिवारो में अर्थिक संकट गहराने लगा था तब निम्न व निम्न मध्यम एवं मध्यम वर्ग के परिवारो की महिलाओ ने पारिवारिक दायित्व के साथ–साथ आर्थिक क्षेत्र में भी अपनी भूमिका निभायी व सामाजिक तौर पर भी अनेक महिला समूहो का निर्माण कर

जन जागरूकता फैलाने का कार्य किया जो बहुत सराहनीय है, इसके परिणाम स्वरूप लॉकडाउन के समय जब परिवार पर आर्थिक दबाव था, आर्थिक साधन लगभग समाप्त हो चुके थे इस दौर में महिलाओंं ने पविार के आर्थिक संकट को कम करने के लिये नये रोजगार/आयामो को अपनाया तथा आर्थिक विकास में अपनी भूमिका द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

संदर्भ सूची–

1. "Chronic Hunger and Status of Women In India" मूल से 10 सितम्बर 2014 को पुरोलिखित अभिगमन तिथि 24 दिसम्बर 2006
2. साउथ एशियन वूमंस नेटवर्क (एस एड डब्लू.एन.ई.टी.)

प्रश्नावलीः

नामः.....

पताः.....

शिक्षाः.....

फोन न0:.....

1. पारिवारिक आजीविका का साधनः.....
2. क्या आपका परिवार सयुक्त है अथवा एकाकी ? ----------
3. परिवार में बच्चों की संख्याः .....
4. परिवार में सदस्यो की संख्याः .....
5. परिवार में शिक्षा का स्तर व माध्यमः.....
6. आपके परिवार में कुल सदस्यो की संख्या ?----------
7. सरकारी क्षेत्र में कार्यरत पारिवारिक सदस्यः .....
8. निजी क्षेत्र में कार्यरत सदस्य : .....
9. परिवार की मासिक आयः .....
10. क्या आपका निजी व्यवसाय है या सरकारी कर्मचारी?----------

11. कोविड–19 लॉकडाउन का आपके जीवन पर असरः.....

12. कोरोना काल के दौरान सृजनात्मक नये कार्य

1. ..... 4.....
2. ..... .5.....
3. ..... 6.....

13. महिलाओं की परिवार में अर्थिक भूमिका(हैं या नही है):.....

14. कोरोना काल के दौरान सृजनात्मक नये कार्य से प्राप्त आयः.....

15. भविष्य हेतू जमा राशि का प्रावधानः.....